एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

हरी खाद के लिए फसलों का चुनाव

(*हेमराज नागर एवं हंसा कुमावत)
कृषि रसायन एवं मृदा विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
* hemrajdhakad444@gmail.com

हरी खाद मृदा उर्वरता बनाए रखने के लिए हरी फसलों को खेत में जोतना एक सामान्य एवं प्राचीन प्रक्रिया है। प्राचीन ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है है। रोमन लोग सेम, लूपिन और मूंग व मोठ का प्रयोग इस काम के लिए करते थे । जर्मनी के वैज्ञानिक ल्युफिट्श ने सन 1880 ई. लुआर मिट्टी में लूपिन के उगाने से मिट्टी के सुधार के साथ-साथ उपजाऊ में वृद्धि देखी ।आज विश्व के अनेक भागों में इसका प्रयोग भूमि की भौतिक दशा सुधारने तथा उसकी उर्वरता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

हरे पादप को पुष्प अवस्था पर मृदा की भौतिक दशा सुधारने तथा मृदा उर्वरता उन्नत करने हेतु मृदा में जोतना अथवा दबाना हरी खाद देना कहलाता है ।

हरी खाद देने की विधियां

मृदा प्रकार, हरी खाद की फसल की प्रकृति तथा जलवायु के अनुसार हरी खाद देने की विभिन्न विधियां प्रयोग में लाई जाती है ।

(1) हरी खाद देने की सीटू विधि

इस विधि में हरी खाद को फसल को खेत में फूल से पूर्व अवस्था तक अथवा बाद तक उगाया जाता है तथा खड़ी फसल को उसी खेत में मिट्टी पलटने वाले हल से दबा दिया जाता है । इस प्रकार की विधि के लिए ढैचा, ग्वार, सनई, लोबिया आदि फसलें उपयुक्त है ।

(2) हरी पत्तियों से हरी खाद

इस विधि के अंतर्गत हरी खाद की फसलों को एक खेत में उगाकर दूसरी जगह मिट्टी में दबाया जाता है अथवा पेड़ों की शाखाओं व हरी पत्तियों को एकत्रित करके खेत में दबाई जाती है । यह विधिया ऐसे क्षेत्र में प्रयोग की जाती है जहां जल का अभाव होता है । वनों से प्राप्त पतियों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है ।

हरी खाद की मुख्य फसलें

हरी खाद में प्रयोग आने वाली फसलों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है ।

दलहनी फसलें:-

सनई, ढैचा, मूंग, उड़द, ग्वार, लोबिया, नीम, बरसीम, सोयाबीन, रिजका आदि

अदलहनी फसलें :-

राई, जो, सरसों, मक्का, ज्वार, सूरजमुखी आदि

हरी खाद के फसलों के गुण

1. फसल खूब पत्तियों वाली तथा शाखदार हो ताकि प्रति हेक्टर अधिक से अधिक मात्रा में कार्बनिक पदार्थ मृदा मैं मिलाया जा सके फसल के वनस्पति भाग मुलायम हो ताकि वह आसानी से सड़ सके।
2. फसल फलीदार होनी चाहिए क्योंकि इन पौधों की जड़ों में ग्रंथियां होती है जिन में रहने वाले बैक्टीरिया वायुमंडल की नाइट्रोजन को मृदा में अधिक मात्रा में स्थरीकरण करते हैं।
3. इनका बीज सस्ता वह आसानी से उपलब्ध हो सके।
4. फसलों की जड़े नीचे गहरी जाए जिससे मिट्टी भुरभुरी बन सके और पोषक तत्वों को अधोमृदा से निकालकर ऊपर ले आ सके।
5. हरी खाद ऐसी हो कि कम उपजाऊ मृदा पर भी सफलतापूर्वक उगाई जा सके तथा जल की आवश्यकता भी कम हो।
6. फसल को कीट ना लगे और रोगो का आक्रमण कम हो तथा विषम जलवायु सहन कर सके।
7. फसल चक्र में उसका उचित स्थान होना चाहिए फसल की तैयारी में अधिक समय ना लगता हो उसके अधिक प्रबंध व देखरेख करने की आवश्यकता ना पढ़ती हो।
8. मिट्टी में उपयोगी अवशेष छोड़े।